मिंग-लो ने हटाया पहाड़!

अर्नोल्ड

मिंग-लो ने हटाया पहाड़!

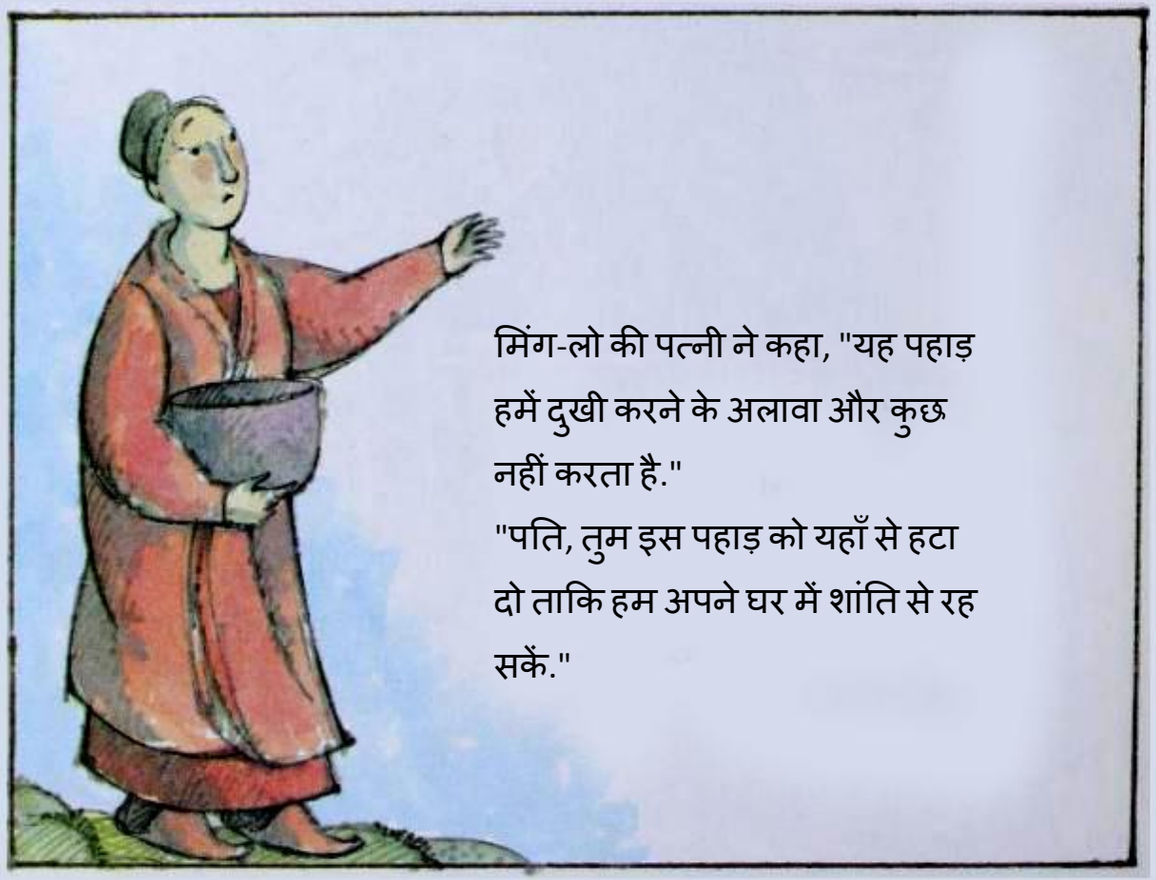

मिंग-लो की पत्नी ने कहा, "यह पहाड़ हमें दुखी करने के अलावा और कुछ नहीं करता है."
"पति, तुम इस पहाड़ को यहाँ से हटा दो ताकि हम अपने घर में शांति से रह सकें."

"मेरी प्यारी पत्नी," मिंग-लो ने कहा,
"मेरे जैसा एक छोटा आदमी भला कैसे एक बड़े पहाड़ को हटा सकता है?"
"मुझे क्या पता?" उसकी पत्नी ने कहा.
"देखो, गाँव में एक बुद्धिमान आदमी रहता है. जाओ, उससे जाकर पूछो."

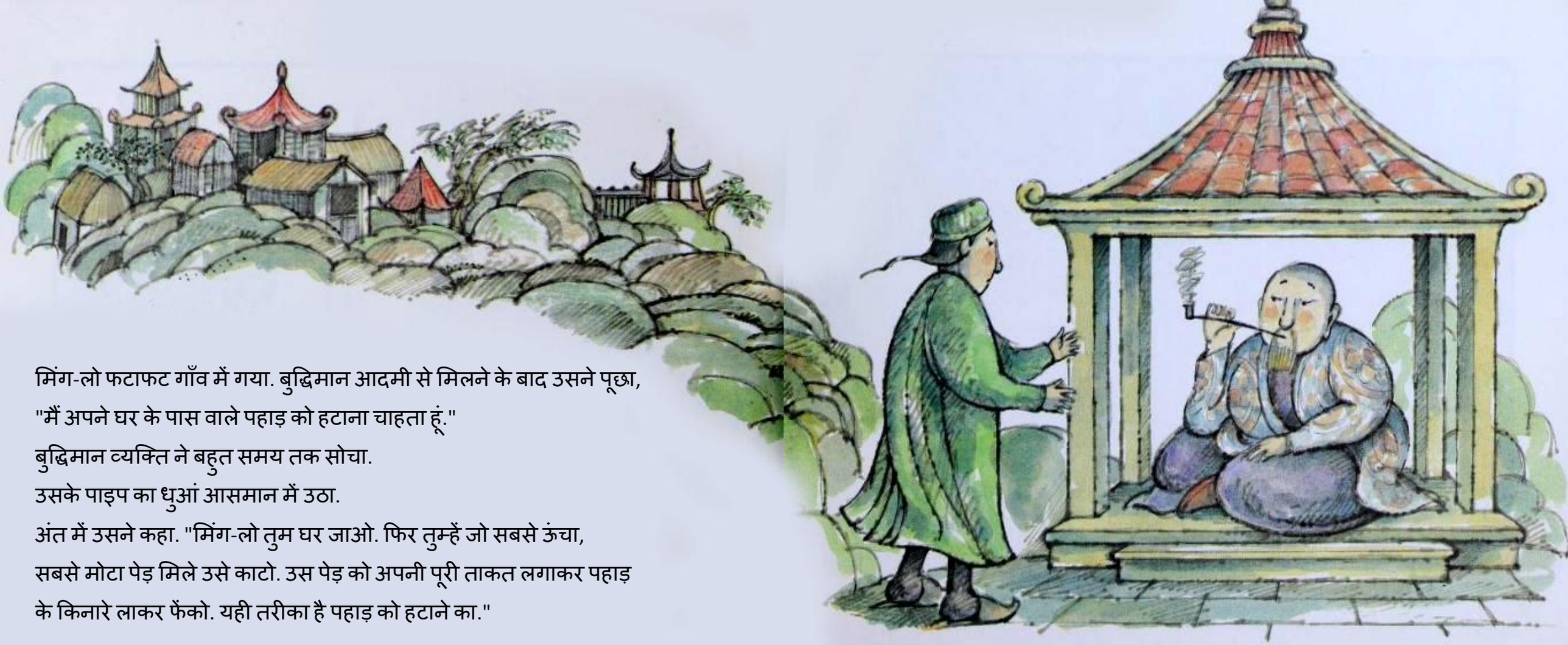

मिंग-लो फटाफट गाँव में गया. बुद्धिमान आदमी से मिलने के बाद उसने पूछा,
"मैं अपने घर के पास वाले पहाड़ को हटाना चाहता हूं."
बुद्धिमान व्यक्ति ने बहुत समय तक सोचा.
उसके पाइप का धुआं आसमान में उठा.
अंत में उसने कहा. "मिंग-लो तुम घर जाओ. फिर तुम्हें जो सबसे ऊंचा,
सबसे मोटा पेड़ मिले उसे काटो. उस पेड़ को अपनी पूरी ताकत लगाकर पहाड़
के किनारे लाकर फेंको. यही तरीका है पहाड़ को हटाने का."

मिंग-लो अपने घर गया. उसे जो सबसे ऊंचा, सबसे मोटा पेड़ मिला उसने उसे काटा. फिर मिंग-लो और उसकी पत्नी ने पेड़ को दोनों ओर से कसकर पकड़ा. फिर उन्होंने तेजी से भागते हुए पेड़ के तने को पहाड़ की तरफ धकेला.

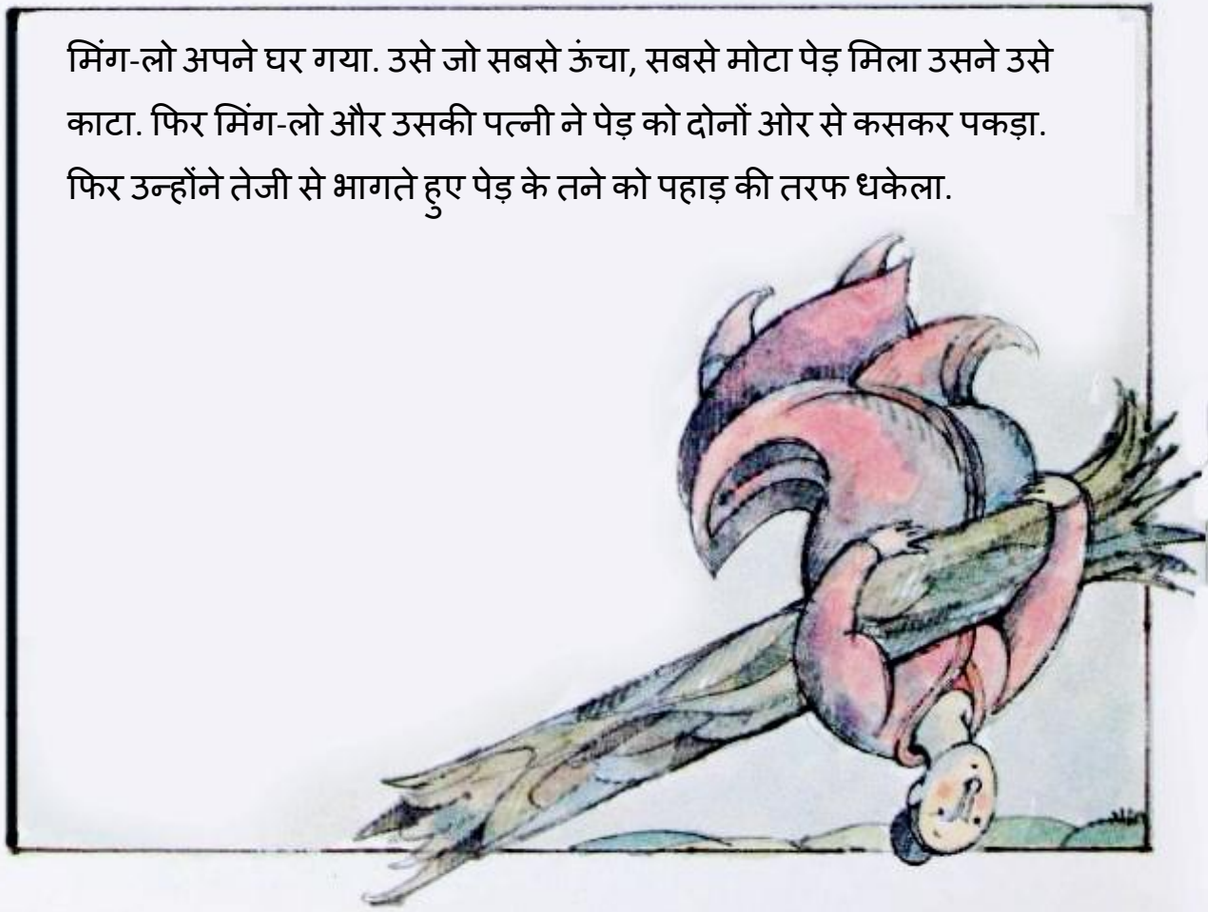

पेड़ आधे में फट गया. मिंग-लो और उनकी पत्नी दोनों अपने सिर के बल गिरे. लेकिन पहाड़ एक इंच भी नहीं हिला.

"फिर वापस उस बुद्धिमान आदमी के पास जाओ," मिंग-लो की पत्नी ने कहा. "उससे पहाड़ को हिलाने का दूसरा तरीका पूछ कर आओ."

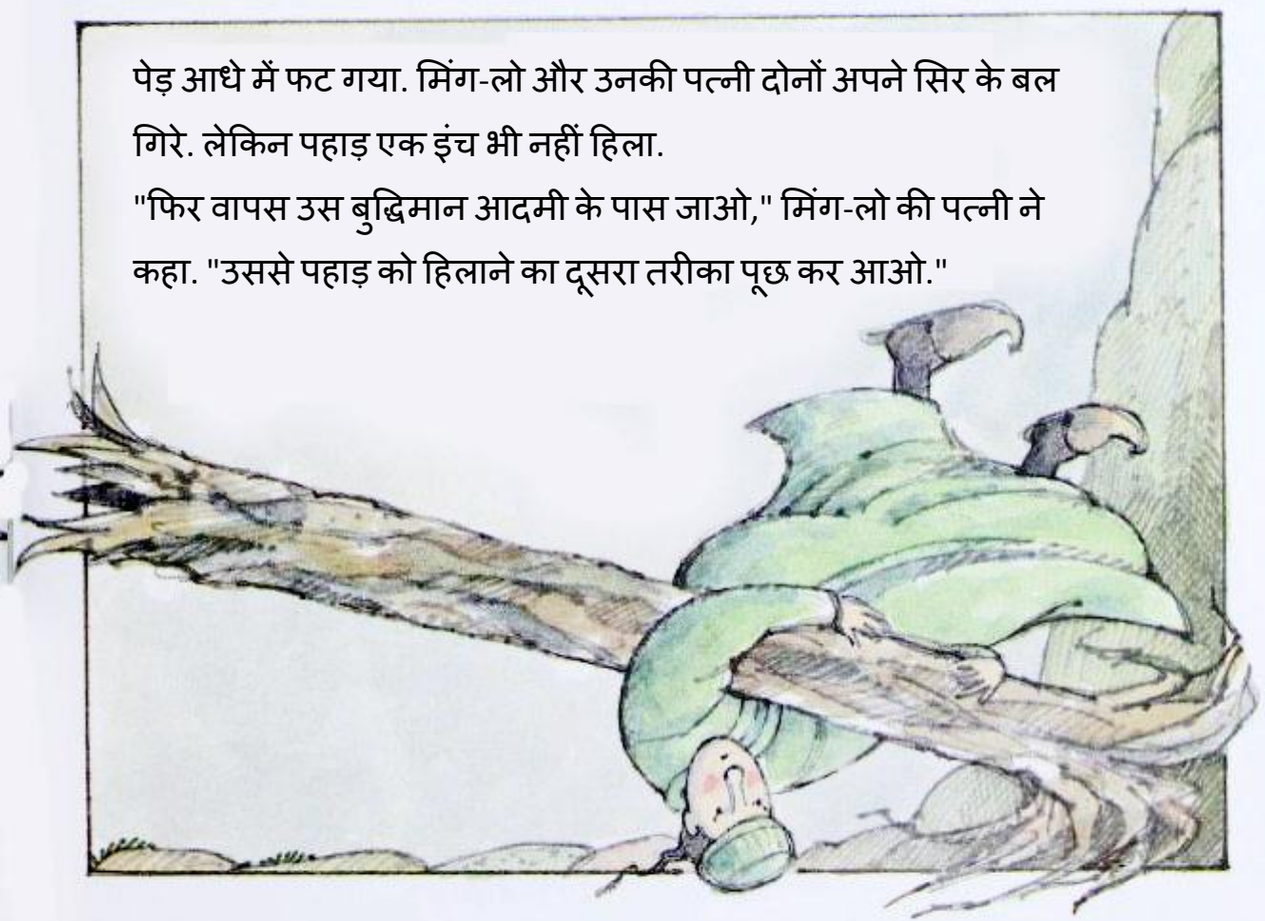

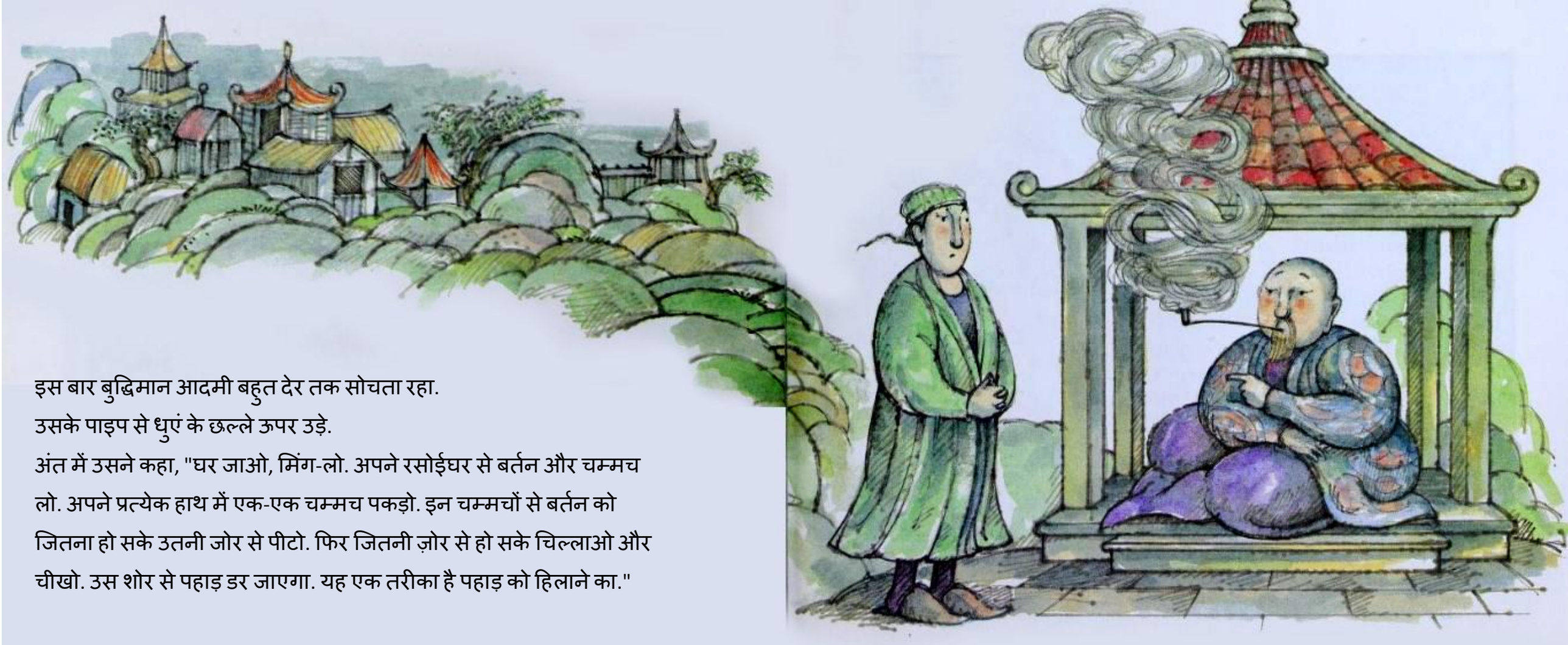

इस बार बुद्धिमान आदमी बहुत देर तक सोचता रहा.
उसके पाइप से धुएं के छल्ले ऊपर उड़े.
अंत में उसने कहा, "घर जाओ, मिंग-लो. अपने रसोईघर से बर्तन और चम्मच लो. अपने प्रत्येक हाथ में एक-एक चम्मच पकड़ो. इन चम्मचों से बर्तन को जितना हो सके उतनी जोर से पीटो. फिर जितनी ज़ोर से हो सके चिल्लाओ और चीखो. उस शोर से पहाड़ डर जाएगा. यह एक तरीका है पहाड़ को हिलाने का."

मिंग-लो अपने घर भागा. उसने अपनी रसोई से बर्तन और चम्मच लिए. मिंग-लो और उनकी पत्नी ने अपने चार हाथों में एक-एक चम्मच पकड़ा. वे ज़ोर से चिल्लाए और चीखे. वे बर्तन पर चम्मचों को जितना संभव हो उतनी ज़ोर से पीटते रहे.

उन्होंने बहुत शोर मचाया. उससे चिड़ियों के झुंड पेड़ों से उड़ गए, लेकिन पहाड़ बिल्कुल भी नहीं हिला.

मिंग-लो की पत्नी ने रोते हुए कहा, "बुद्धिमान आदमी के पास वापस जाओ. हमें पहाड़ को हटाने का कोई रास्ता खोजना चाहिए!"

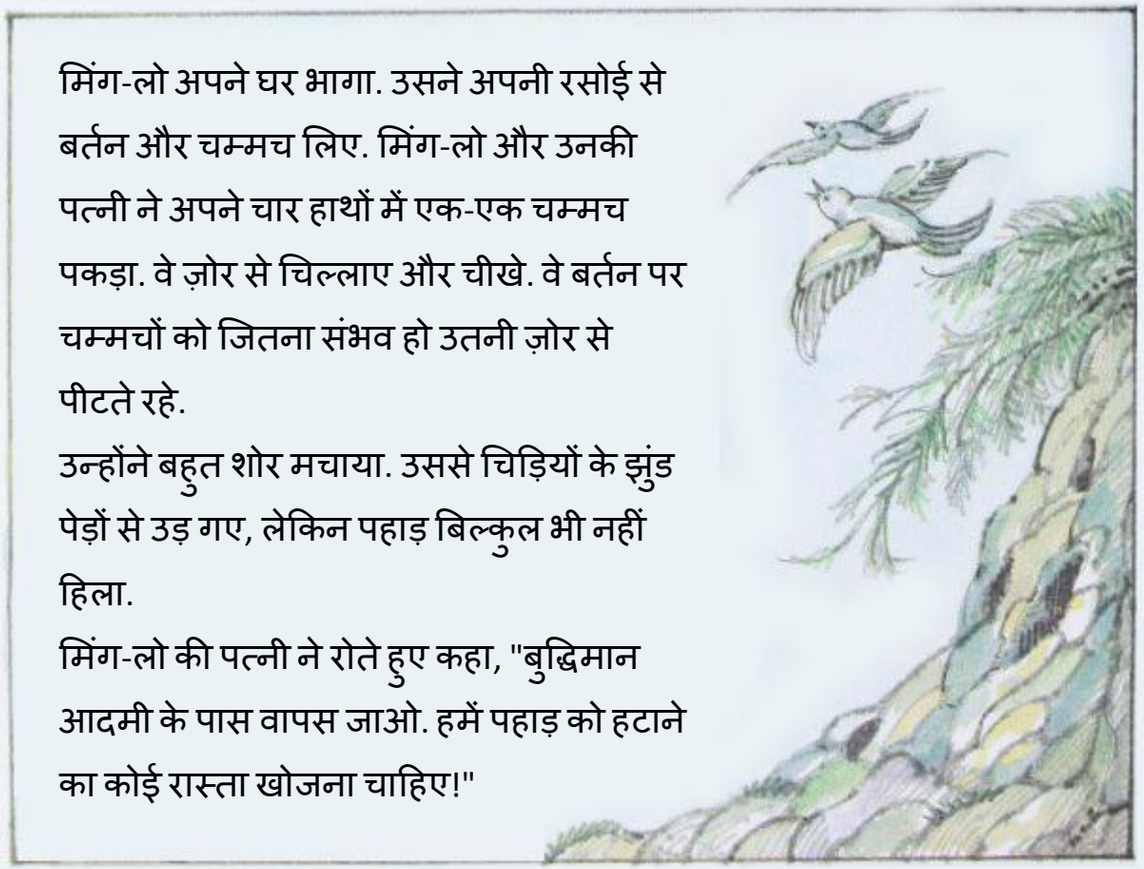

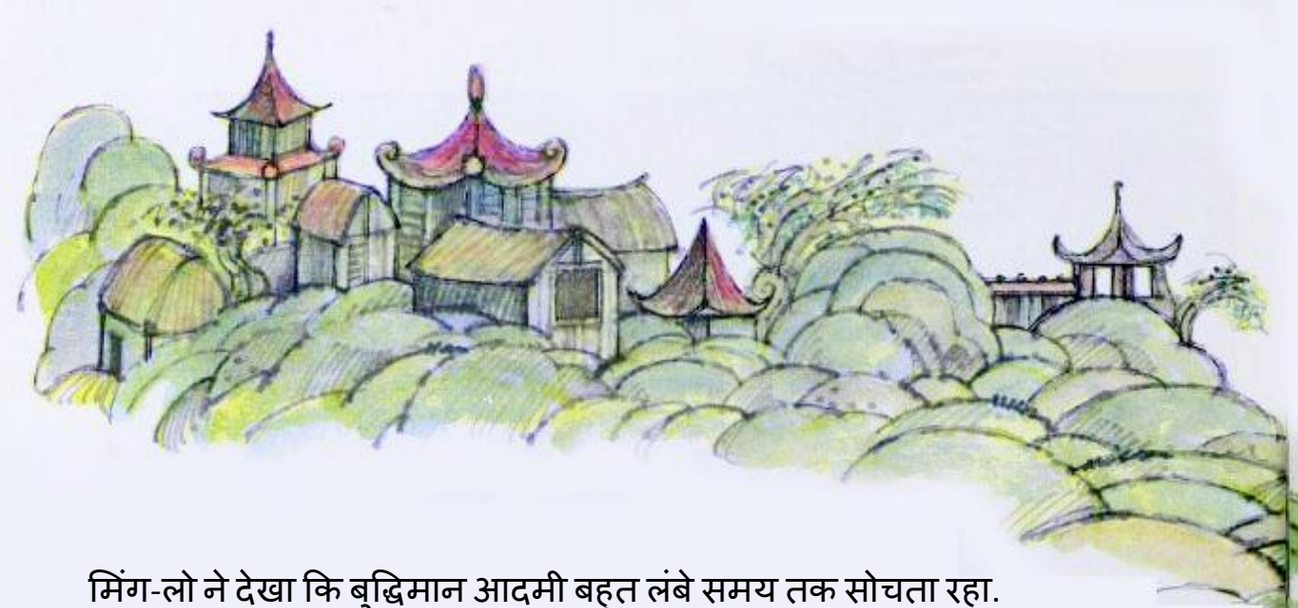

मिंग-लो ने देखा कि बुद्धिमान आदमी बहुत लंबे समय तक सोचता रहा.
उसके पाइप में से धुएं के बादल निकले.
अंत में उसने कहा, "घर जाओ, मिंग-लो. बहुत सारे केक और रोटियां बनाओ. उन्हें उस प्रेत-आत्मा को अर्पण करो जो पहाड़ की चोटी पर रहती है. प्रेत-आत्मा हमेशा भूखी रहती है. वह तुम्हारी भेंट पाकर खुश होगी. प्रेत-आत्मा तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगी. यही वो तरीका है जिससे तुम पहाड़ को हिला पाओगे."

मिंग-लो भागा-भागा घर गया. अपनी पत्नी के साथ, उसने बहुत सारे केक, ब्रेड के बिस्कुट पकाए. फिर दोनों मिलकर पहाड़ की चोटी पर चढ़े जहाँ प्रेत-आत्मा रहती थी.

पहाड़ पर चढ़ते हुए उन्होंने तेज हवा के थपेड़ों को झेला. तेज़ हवा, सीटी बजाती हुई उनके पास से गुज़रती रही.

जल्द ही उनकी सभी रोटियों और केक हवा में उड़ गए. प्रेत-आत्मा के लिए कुछ भी नहीं बचा, और पहाड़ बिल्कुल भी नहीं हिला.

इस बार मिंग-लो ने पत्नी के आदेश का इंतज़ार नहीं किया.

वो बिना प्रतीक्षा किए जल्दी से बुद्धिमान आदमी के पास वापस गया.

"इस पहाड़ को हिलाने में मेरी मदद करें ताकि मैं शांति से अपने घर में रह सकूं!" मिंग-लो ने कहा.

बुद्धिमान आदमी काफी देर तक गहन विचार में मगन रहा. उसके पाइप से इतना धुआं निकला कि उससे उसका चेहरा ही ढँक गया.

अंत में उसने कहा, "घर जाओ, मिंग-लो. फिर अपने घर का अंजार-पंजर अलग-अलग करो. घर की हरेक ईंट, कबेलू, लकड़ी को अलग करो. फिर उस सब सामान को अच्छी तरह से रस्सी और सुतली से बांधो. घर के पूरे सामान को अपने हाथों में पकड़ो और अपने सिर के ऊपर रखकर पहाड़ के पास जाओ. फिर पहाड़ की ओर अपना मुंह करो और अपनी आँखें बंद करो.

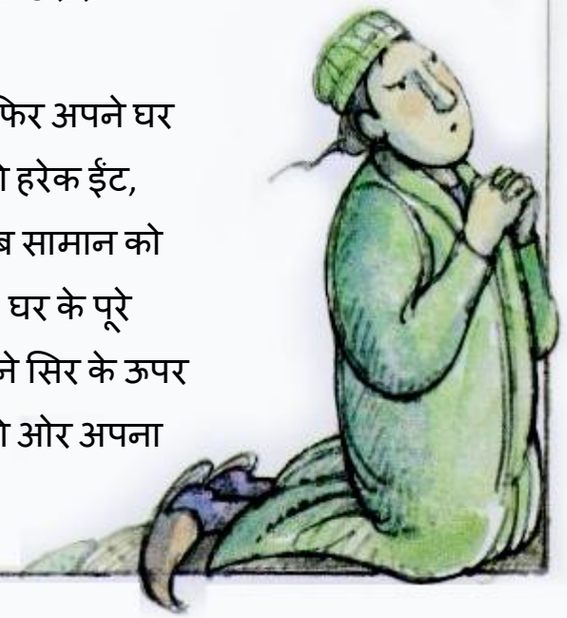

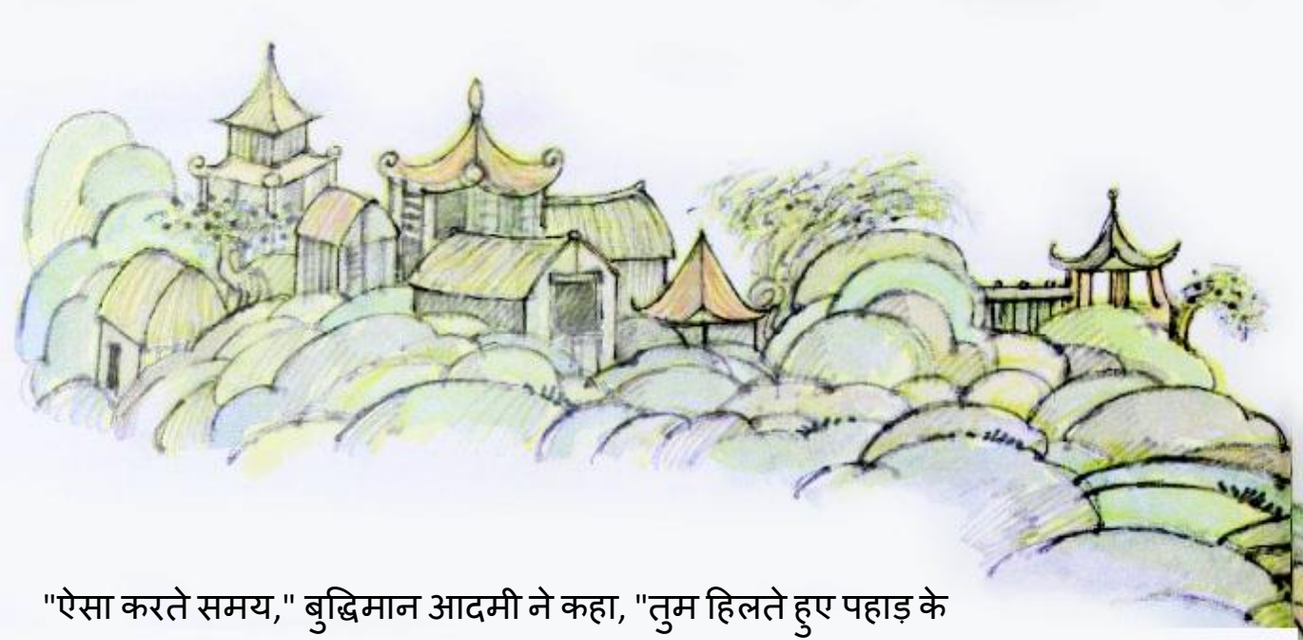

"ऐसा करते समय," बुद्धिमान आदमी ने कहा, "तुम हिलते हुए पहाड़ के सामने नाच करो. पहले अपने बाएं पैर को अपने दाएं पैर के पीछे रखो. फिर अपने दाएं पैर को बाएं पैर के पीछे रखो. तुम इसे कई घंटों तक बार-बार करो. फिर जब तुम अपनी आँखें खोलोगे, तो तुम देखोगे कि पहाड़ बहुत दूर चला गया होगा."

"यह एक अजीब नृत्य है," मिंग-लो ने कहा, "पर अगर इससे पहाड़ हिलाता है, तो मैं इसे एक बार ज़रूर करूंगा."

मिंग-लो अपने घर भागा हुआ गया. उसने
अपने घर का सारा सामान इकट्ठा किया.
उसने उन सभी चीजों को इकट्ठा किया जो
उसकी संपत्ति थी.
मिंग-लो और उनकी पत्नी ने रस्सी और
सुतली से सारे सामान को बंडलों में बांध दिया.
उन्होंने बंडलों को अपने हाथों में पकड़ा और
अपने सिर पर रखा.
फिर मिंग-लो ने अपनी पत्नी को चलती पहाड़
का नृत्य करना दिखाया. उन्होंने पहाड़ की ओर
अपना मुंह किया और फिर अपनी आँखें बंद
कीं. ध्यान से, वे अपने पैरों के बल नाचते रहे.

उन्होंने अपने बाएं पैर को सीधे दाएं पैर के पीछे रखा.
फिर उन्होंने अपने दाएं पैर को बाएं पैर के पीछे रखा.
पड़ोसियों ने मिंग-लो और उसकी पत्नी को अपनी सारे साजो-सामान के साथ खेतों में से पीछे की ओर जाते हुए देखा.
सबके लिए वो एक अजीब दृश्य था और वे आश्चर्य से उन्हें देखते रहे.

एक-एक ईंट, बांस और लकड़ी को जोड़कर उन्होंने अपने घर का पुनर्निर्माण किया. उन्होंने अपने सारे सामान को खोला और उसे अपने नए घर में सजाया. फिर मिंग-लो और उनकी पत्नी ने अपना बाकी जीवन एक खुले आसमान और एक गर्म सूरज के नीचे बिताया.

जब बारिश आई तो वे बूंदे धीमे-धीमे ऐसी छत पर पड़ीं जिसमें कोई छेद नहीं था. वे अक्सर उस पहाड़ को देखते थे जो दूरी पर खड़ा था और अब छोटा दिखता था. उनके दिल में खुशी थी क्योंकि वे जानते थे कि उन्होंने पहाड़ को हिला दिया था.

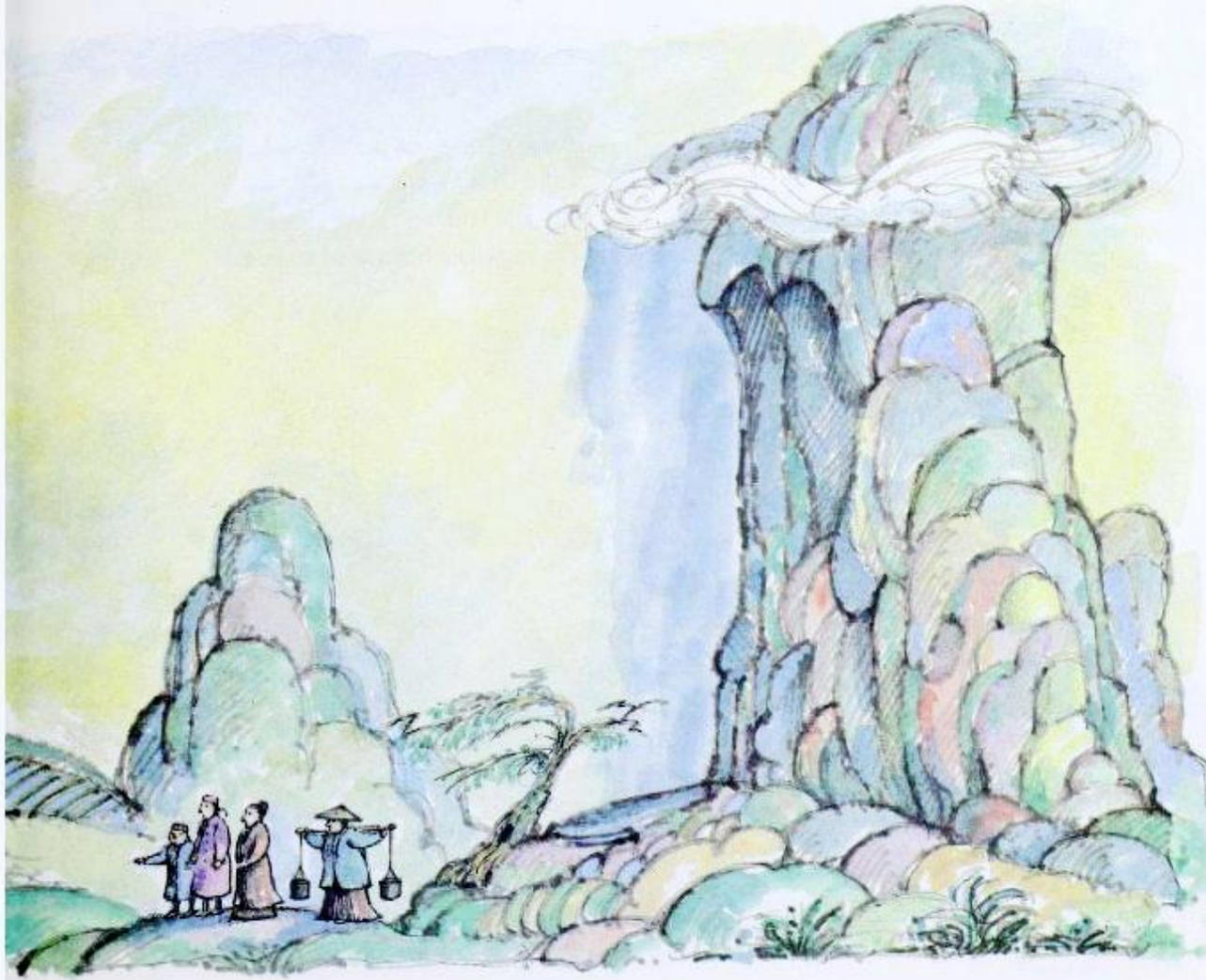

कई घंटे बीतने के बाद, मिंग-लो और उसकी पत्नी ने अपनी आँखें खोलीं.

"देखो," मिंग-लो ने रोते हुए कहा, "हमारे नृत्य ने अपना काम किया! देखो पहाड़ कितनी दूर चला गया!"

समाप्त